Topic for Elocution

ENGLISH

Although Plato's Republic is best known for its definitive defense of justice, it also includes an equally powerful defense of philosophical education. Plato's beliefs on education, however, are difficult to discern because of the intricacies of the dialogue. Not only does Socrates (Plato's mouthpiece in the dialogue) posit two differing visions of education (the first is the education of the warrior guardians and the second is the philosopher-kings' education), but he also provides a more subtle account of education through the pedagogical method he uses with Glaucon and Adeimantus. While the dramatic context of the dialogue makes facets of the Republic difficult to grasp, in the case of education, it also provides the key to locating and understanding Socrates' true vision of education. Socrates' pedagogical approach with the interlocutors corresponds closely with his vision of the education of the philosopher-kings--an overlap which suggests that the allegory of the cave is representative of true Socratic education.

Topic for Elocution

HINDI

गीता में स्थितप्रज्ञ की अवधारणा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। निष्काम कर्मयोग के अलावा भारतीय समाज को गीता की दूसरी महत्वपूर्ण देन स्थितप्रज्ञ का आदर्श है। गीता में आत्मसाक्षात्कार या ईश्वरलाभ करने वाले व्यक्ति को स्थितप्रज्ञ कहा गया है।

गीता में ईश्वरलाभ के कई मार्ग बताये गये हैं- ज्ञानयोग, भक्तियोग, निष्काम कर्मयोग एवं प्रपत्तिमार्ग। गीता का स्पष्ट मत है कि किसी भी मार्ग का अनुसरण करके आत्मलाभ या ईश्वरसाक्षात्कार सम्भव है, यद्यपि वह निष्काम कर्मयोग को एतत्हेतु सर्वोत्तम मार्ग मानती है, क्योंकि ईश्वरलाभ के विभिन्न मार्गों का तुलनात्मक मूल्यांकन करते हुए गीता का स्पष्ट कथन है, 'मुझे जानने का प्रयास करो। यदि तुम मेरा चिन्तन नहीं कर सकते हो तो योगाभ्यास करो। यदि यह तुम्हारे अनुकूल न हो तो अपने सभी कर्मों को मुझे अर्पित करके मेरी सेवा करो। यदि यह भी तुम्हें कठिन प्रतीत हो तो अपने कर्तव्य का पालन करो, किन्तु फल की आकांक्षा मत करो'। गीता का यह भी मत है कि ईश्वरलाभ या आत्मसाक्षात्कार इसी जीवन में सम्भव है। गीता ईश्वरलाभ-प्राप्त व्यक्ति को 'स्थितप्रज्ञ' कहती है। इस प्रकार भारतीय विचारधारा को गीता की दो महत्वपूर्ण देन हैं-निष्काम कर्मयोग का आदर्श और स्थितप्रज्ञ की अवधारणा। गीता स्थितप्रज्ञ के आदर्श को मानवजीवन की सर्वोच्च अवस्था और सर्वोच्च मूल्य मानती है।

[redacted]

समाधिस्थ स्थितप्रज्ञ के स्वरूप एवं व्यवहार के विषय में अर्जुन द्वारा पूछे गये प्रश्न के उत्तर के सन्दर्भ में इसका विवेचन किया है।

Date: 12/12/2024

Time: 11:00 AM